کی سچویشن کے سلسلہ میں کوئی خصوصی طور پر ہمارے ہوم منسٹر کے سامنے ایسی شکل ہے کہ یہاں لا اینڈ آرڈر کا ازسر نو جائزہ لیں اور دیکھیں کہ وہ فیگرس جو ہمارے سامنے اخباروں کے ذریعہ آتی ہیں وہ صحیح ہیں یا ہوم منسٹری کی جو مشینری پیش کر رہی ہے وہ صحیح ہے -

†[श्री सैयद अहमद हाशमी : दिल्ली दारुलसल्तत है, कैपिटल है और जाहिर है। कि बहुत से मामलात में दिल्ली की मिसाल सामने रखी जाती है। अगर दिल्ली कैपीटल के अन्दर, मर्कज़ के अन्दर ला एंड आर्डर की सिचुएशन कन्ट्रोल में न रहे और लोग ये महसूस करें कि यहां पर जान-ओ-माल, इज्जत व आबरू महफूज नहीं है, रात रात दिन में भी निकलना लोगों के लिये दुश्वार हो जाये तो जाहिर है कि इससे मुल्क के दूसरे हिस्सों पर भी अच्छा असर नहीं पड़ेगा, बल्कि खराब असर पड़ेगा। अब सूरते हाल यह है कि अखबारात जो हम लोग डेली देखते हैं इस से अन्दाजा यह होता है कि रोज ब रोज जरायम की तादाद बढ़ती जा रही है लेकिन होम मिनिस्ट्री जो फिगर्स पेश करती है अगर अखबारात की रिपोर्टिंग जोड़ी जाय तो इससे कहीं ज्यादा होती है। मैं यह पूछना चाहता हूं कि दिल्ली की ला एन्ड आर्डर की सिचूएशन के सिलसिले में कोई खसूसी तौर पर हमारे होम मिनिस्टर के सामने ऐसी शक्ल है कि यहां ला एन्ड आर्डर का अजसरेनौ जायजा लें और देखें कि वह फिगर्स जो हमारे सामने अखबारों के जरिये आती हैं वह सही हैं या होम मिनिस्ट्री की जो मशीनरी पेश कर रही है वह सही हैं ?]

श्री मोरारजी आर० देसाई : सम्मानित सदस्य के सामने कौन सी फिगर है वह तो बताई नहीं। फिगर बता देते तो मैं कह सकता हूं कि कहां से वह फिगर आई। ऐसे ही कंपेरिजन कैसे करते हैं मेरी समझ में नहीं आता मुझे यह बात कबूल है कि यह स्थिति सुधरनी चाहिये और बहुत ज्यादा सुधरनी चाहिये इसमें मुझे कोई शक नही। मगर यह कहना कि अब बढ़ रही है यह बात सही नही है मैंने कई दिल्ली शहरियों से भी पूछा है और ऐसे लोगों से पूछा है जिनका गवर्नमेंट से कोई सम्बन्ध नहीं है। अब कुछ सुधर रही है ऐसा असर आम जनता पर पड़ा हुआ है मैं यह कह सकता हूं। इसमे अलग-अलग राय हो सकती हैं इसलिये मुझे इस में झगड़ा नही करना है इतना मैं जरूर चाहता हूं कि इसको सुधरना है और सुधारने मे जो मदद दे सकते है वह मदद लेने के लिये मैं राजी हूं और जो मदद देंगे उनका आभार भी मैं मानूंग

New body for Ambassador Car

*394. SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA:‡
SHRI PRAKASH MEHROTRA:
SHRI CHARANJIT CHANANA:
SHRI L. R. NAIK:
SHRI KHURSHED ALAM KHAN:

Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether Government have permitted M/s. Hindustan Motors to import dies to make a new type of body of the Ambassador car;

(b) whether there is likely to be an improvement in the engine of the car also;

(c) whether the price of the car with new body is likely to increase;

†[ ] Devanagari transliteration.

‡The question was actually asked on the floor of the House by Shri Buddha Priya Maurya.

(d) whether Government propose to direct M/s. Hindustan Motors not to increase the price of the car with new body without any improvement in the engine; and

(e) if not, what are the reasons therefor?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI GEORGE FERNANDES): (a) to (e) Hindustan Motors are negotiating for import of dies, drawings and designs for upgrading the body and engine of the cars being manufactured by them. Their proposals have just been received on 31st July, 1978 and will be duly processed taking into account various criteria including those relating to improvement in reliability, performance, passenger comfort, etc. at economical cost.

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : श्रीमन्, बिरला मंदिरों की मजबूती और सुन्दरता देखते ही बनती है। लेकिन जहां तक एम्बेसिडर कार का सवाल है, ऐसा लगता है कि मजबूती एम्बेसिडर कार को छू भी नही गई है और जहां तक सुन्दरता का सवाल है, शायद एम्बेसिडर कार से बदसूरत कार दुनिया मे कोई और नहीं है। अब तो एक कहावत ही बन गई है कि एम्बेसिडर कार का हार्न के अलावा बाकी सब कुछ बजता है

DR. V. P. DUTT: All cars; Fiat also,

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : चूंकि मूल प्रश्न एम्बेसिडर कार से सम्बन्धित है, इसलिये मै दूसरी गाड़ियों के बारे में नही कह रहा हूं। अगर मै दूसरी गाड़ियों के बारे मे भी पूछने लगूंगा तो सभापति जी नाराज हो जायेंगे। आज स्पेस और राकेट के युग में हमारा देश डवलपिंग कन्ट्रीज में सरताज माना जाता है, लेकिन एम्बेसिडर कार एक बदनुमा कार बन कर रह गई है। ऐसी स्थिति में मैं माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि क्या यह सही है कि एम्बेसिडर कार का इंजिन जिस हौर्स पावर का है, उसके मुकाबले में मोर्डन कार से एम्बेसिडर कार में 40-50 फीसदी अधिक फ्यूल खर्च होता है और इस तरह से हमारी देश की विदेशी मुद्रा जो सोने से भी अधिक कीमती है उसका धुआं बना कर समाप्त किया जा रहा है ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि इस बारे में मंत्री महोदय क्या सोच रहे है ? दूसरी बात मै यह जानना चाहता हूं कि इस एम्बेसिडर कार के कारखाने की इन्स्टाल्ड केपेसिटी कितनी है और उसमें वास्तव में कितना प्रोडक्शन हो रहा है ? इसके साथ-साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि इसकी बुक वैल्यू क्या है ? इसके अलावा मैं यह भी जाना चाहता हूं कि आजकल डीजल से चलने वाली कारें चल पड़ी हैं और आप यह भी जानते है कि आज के युग मे कार मिडिल क्लास और अपर मिडिल क्लास लोगो के लिए एक जरूरी चीज हो गई है, इसलिये क्या आप इन कारों को डीजल कार के रूप मे बदलने के लिए कोई काम कर रहे है ताकि अधिक से अधिक लोग इसका इस्तेमाल कर सकें ?

श्री जार्ज फर्नेन्डीज : सभापति जी, यह बात सही है कि एम्बेसिडर कार के इंजिन में पिछले 20 वर्षों में किसी भी प्रकार का सुधार नहीं हुआ है। वही इंजिन जो एक जमाने से चल रहा था वही अब भी चल रहा है। इसकी परफोरमेन्स मे भी कोई विशेष सुधार नही हुआ है इसके लिए जिस शोध या रिजर्स की आवश्यकता थी, पिछले 20 वर्षों में कम्पनी के माध्यम से, वह भी नही हुआ है। जहा तक केपेसिटी का सवाल है, उसकी इन्स्टाल्ड केपेसिटी 30 हजार कार बनाने की है। पिछले साल कम्पनी ने 20,440 गाड़ियां बनाई है। उसकी बुक वैल्यू के सम्बन्ध में इस वक्त मेरे पास सूचना नही है। उसके लिए मुझे अलग से नोटिस की आवश्यकता होगी। डीजल कार बनाने के बारे में जो

सुझाव माननीय सदस्य ने दिया है, उसके बारे में मुझे यही कहना है कि हम पूरी ओटो मोबाइल इंडस्ट्री के बारे मे अध्ययन कर रहे हैं। उनके सुझावों को भी हम उस अध्ययन में शामिल करेंगे ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : श्रीमन् माननीय मंत्री महोदय को इस बात की जानकारी होगी कि पैट्रोल सेविंग मोटर आयल की खोज की गई है और इस के सम्बन्ध में एक्सपेरिमेन्ट करने के बाद हमारे देश के विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंचे कि इस तेल का इस्तेमाल करने से 7 फीसदी तेल की कंजम्शन कम हो जाएगी। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस ओर भी आपका ध्यान गया है या नही ? दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि एम्बेसिडर कार में जो नई सूरत लाने के लिए सुझाव आए है और उसके लिए जो नई डाइ इम्पोर्ट की जायेगी, उसमें कितनी विदेशी मुद्रा लगेगी और उसके साथ-साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि क्या कम्पनी को कीमतें बढ़ाने की इजाजत दी जायगी ? आप जानते है कि कीमतें पहले से ही ज्यादा हैं अगर इसकी कीमत और बढ़ा दी जायगी तो ये कारें मिडिल क्लास और अपर क्लास लोगों की पहुंच से बाहर हो जायेंगी। इसके साथ-साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि क्या आप इस कार के इंजिन में भी किसी प्रकार का सुधार लायेंगे ताकि सूरत बदलने के साथ-साथ उसकी सीरत बदलने के लिए भी कोशिश की जाय ? मैं समझता हूं कि जब तक इसके इंजिन में किसी प्रकार का सुधार नहीं लाया जाएगा तब तक काम चलने वाला नहीं है ।

श्री जार्ज फर्नेन्डीज: सभापति जी, पैट्रोल बचाने वाले मोटर आयल के बारे में मुझे जानकारी नही है। मैं उसकी जानकारी करूंगा। अगर इस आयल को इस्तेमाल करने की बात होगी और उसके सम्बन्ध में कोई शोध वाली बात होगी तो उस पर जरूर ख्याल किया जाएगा। जहां तक हिन्दुस्तान मोटर की तरफ से किसी अर्जी का सवाल है, उनकी अर्जी हमारे पास आई है। वह अर्जी 31 तारीख को हमारे पास आई है। उस पर कितना फारेन एक्सचेन्ज खर्च होगा और उसके क्या-क्या पहलु होंगे, इस पर मैं अभी कोई टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं हूं। उनकी अर्जी की जाच करने के बाद ही इस बारे में कुछ कहा जा सकता है। इस अर्जी में केवल शकल बदलने की बात कही गई है। इंजिन को बदलने की बात उसमें नहीं जोड़ी गई है। इस बारे मे मैं इतना ही कह सकता हूं ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : और कीमतों के बारे में ?

श्री जार्ज फर्नेन्डीज : कीमत की बात इसलिये नही कर पाऊंगा क्योंकि जो अर्जी आई है वह 31 तारीख शाम को आई है। उसके अध्ययन के बाद ही कुछ कह पाऊंगा।

श्री प्रकाश मेहरोत्रा: मान्यवर, यह जो नयी बाडी बनाने की बात की जा रही है तो मुझे सन्देह ही है कि इसका अभिप्राय यह है कि कीमतें बढ़ाने का वह कोई बहाना लेना चाहते है। आप जैसा जानते हैं कि पिछले चन्द महीनों में अम्बेसडर कार के दाम काफी बढ़ गये है और आज लगभग 40 हजार की अम्बेसडर आन रोड पड़ती है। जब कि दुनिया में जितनी भी गाड़ियो है, मरसदीज, इम्पाला और निशान ये सभी गाड़ियां 10 हजार रुपये से कम में मिलती है। इसलिये यह संदेह और शंका होने लगी है कि यह एक बहाना इस गाड़ी के दाम बढ़ाने के लिये निकाल रहे हैं। ट्रासपोर्टेशन जो एक सोशल आब्लीगेशन है सरकार का इसके दाम पर मिडिल क्लास के लिये आउट आफ रीच हो गये है। केवल मंत्री और बिजनेस एक्जीक्यटिव ही अधिकतर यह गाड़ी ले सकते है। तो मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं और मैं आपसे यह

आश्वासन चाहता हूं कि नई बाडी बनाने पर भी इसकी कीमत बढ़ाने की इजाजत नहीं दी जायेगी। मेरा सुझाव है कि आप एक टैक्नीकल डिपार्टमेंट बनायें जो यह एक्जामिन करके अपनी रिपोर्ट दे कि उसकी कास्ट को किस तरह से कम किया जाय और उसके टैक्नीकल परफारमेन्स में किस तरह से इम्प्रूवमेंट लाया जाय ?

श्री जार्ज फर्नेन्डीज : सभापति जी मैंने पहले ही कहा है कि हम इस अध्ययन मे लगे हुए हैं कि पूरी आटोमोबाइल इंडस्ट्रीज की जो हालत है उसमें क्या सुधार हो। माननीय सदस्य ने जो सुझाव दिये है उनको भी हम ख्याल में रखेंगे।

SHRI CHARANJIT CHANNA: Would the hon. Minister enlighten the House on a very important aspect of the automobile industry which is only a case study as far as the policy of protection is concerned? Now, would the hon. Minister tell us as to how long we are going to keep these units which, from the economic point of view—you compare them with units like Toyota and the German units which you know and also the new ones which have come up in Korea—are unhealthy units? How long are we going to keep on protecting them with Tariff Boards? All these Boards are being kept at the cost of the common man. Not only in terms of buying a *de luxe* car would it affect people, but also it would affect the common man through other vehicles which include buses, etc. That is No. 1. Number 2 is, while you have just received the application from the company about the replacement of die sets, I would request the hon. Minister that he should keep in view the book value or written-down value of that particular asset and kindly to compare how frequently these dies are replaced. In view of the utilisation rate that you have told us—20,440 out of the installed capacity of 33,000—in a country like India a car selling at Rs. 40,000 is not a very bad figure as far as the utilisation rate is concerned. While examining the whole thing, I would request the hon. Minister to keep specially in mind one particular unit which has come up recently in South Korea in collaboration with the Japanese company Toyota. They have come out with a new car known as "Pony". Interestingly, the slogan displayed outside the Toyota Company in Japan is, "Better Products, Price Lower." This should be the principle while approving any scheme in the world. Also, the petrol consumption of this new South Korean Pony car is 19 kilometres per litre. You can compare that with our own vehicles also.

SHRI GEORGE FERNANDES: I shall keep these suggestions in mind, Sir.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the entire automobile industry is facing a crisis today.

(Interruptions)

SHRI L. R. NAIK: It is a well-known fact that the quality of the Ambassador car is very poor and the Minister has himself admitted now that there has been no improvement whatsoever in its engine and in its performance. He is not in a position to say what would be the increase in price as a result of the import of dies, drawings, etc. etc. In view of these facts, may I ask the hon. Minister through you whether it would be advisable to entrust this work of manufacturing the people's car as we call it here, or Volkswagon as it is known in Germany, or Renault in France, to a public sector undertaking and once and for all solve the problem of the middle class people who are really in need of such cars.

SHRI GEORGE FERNANDES: I shall keep the suggestion in mind.

SHRI KHURSHED ALAM KHAN: It is a known fact that the performance and riding comforts of Ambas-

sador cars are much below the required standard. I would like to know from the hon. Minister whether he has looked into one other aspect of the matter, namely, the quality control stipulation. The Ministry of Industry has laid down certain quality control stipulation which the manufacturers have not observed and the result is that there has been a complete deterioration in the quality of these cars. That being so, will the hon. Minister consider the question of cancelling the manufacturing licence issued to the manufacturers?

SHRI GEORGE FERNANDES: I have not received any specific complaint on the quality control aspect. If the hon. Member refers to any specific case, I will have it examined immediately.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The entire automobile industry is facing a crisis because of the labour trouble and increase in the prices of the raw materials. The installed capacity is much higher than the actual production. Is there any proposal before the hon. Minister to amalgamate M/s. Hindustan Motors and M/s. Premier Automobiles so that more cars are produced according to the installed capacity and the prices of cars are also reduced?

SHRI GEORGE FERNANDES: There is no proposal to amalgamate these two units.

DR. RAFIQ ZAKARIA: Is the hon. Minister thinking of allowing the manufacture of small cars in order to get over the difficulties that the Ambassador car has created?

SHRI GEORGE FERNANDES: I consider all the existing cars in our country as small cars.

MR. CHAIRMAN: Shri Kalyan Roy.

SHRI KALYAN ROY: Is the hon. Minister aware... *(Interruptions)*.

SHRI HAREKRUSHNA MALLICK: I want to know...

SHRI KALYAN ROY: Please sit down. I have been allowed by the Chairman. I would like to know whether the Minister is aware that one of the main factors for the high price of Ambassador cars is the huge overhead costs. If he goes through the list of Directors, he will see that most of them belong either to the house of Birlas or are partners like Kothari, Mandalia and others, who have been issued show-cause notices by the CBI for their involvement in foreign exchange racketeering connected with the United Commercial Bank. When he goes into the question of price increase, will he also go into this?

SHRI GEORGE FERNANDES: The question of price increase is not before us just now. As and when such questions come before us, we will deal with such questions also.

SHRI HAREKRUSHNA MALLICK: The whole nation was looking forward to the manufacture of an indigenous car. What has happened to Maruti

Grant-in-aid to news agencies

*395. PROF. N. M: KAMBLE:†
SHRIMATI MARGARET ALVA:
SHRI MAHENDRA MOHAN MISHRA:
SHRI YOGENDRA MAKWANA:
SHRI KALP NATH RAI:

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a grant-in-aid of rupees eight lakhs each was sanctioned to the two language news agencies viz. the Hindustan Samachar and the Samachar Bharati during the current financial year;

†The question was actually asked on the floor of the House by Prof. N. M. Kamble.